नारीः स्वतंत्रता व सृजन

ओशो वर्ल्ड का यह अंक नारी तथा उसके जीवन के विशिष्ट आयामों को समर्पित है। मूलतः उसका जगत भाव का जगत है। नारी है तो भाव है—भाव उसका स्वभाव है। भाव नहीं तो उसका जीवन ही नहीं, जीवन ही अपने-आप में अभावग्रस्त हो जाता है।

पुरुष मुख्यतः मस्तिष्क में जीता है—स्त्री हृदय में। लेकिन यह केवल सामान्य विभाजन है। आपको ऐसे पुरुष मिल जाएंगे जिनके व्यक्तित्व में से स्त्रैणता प्रस्फुटित होती दिखाई पड़ेगी, और ऐसी स्त्रियां मिल जाएंगी जिनके व्यक्तित्व में पुरुषों से भी अधिक पुरुषत्व बल मारता दिखाई पड़ जाएगा। लेकिन यह केवल शरीर अथवा आकृति की बात नहीं है—यह आतंरिक गुणवत्ता की बात है। शरीर व आकृति में तथा आंतरिक गुणवत्ता में भी एक विशेष उम्र के बाद परिवर्तन परिलक्षित होने लगते हैं। आधी उम्र के बाद स्त्री अपने स्त्रीत्व को जीकर तथा पुरुष के सत्संग में रहते-रहते, अगर वह सजग नहीं है तो, अपनी मृदुता, कोमलता, स्निग्धता को खोने लगती है। पुरुष भी आधी उम्र तक आते-आते, स्त्री के सत्संग में अपने व्यक्तित्व में स्त्रैण गुणों को समाहित कर लेता है। यहां सत्संग शब्द का प्रयोग आध्यात्मिक अर्थों में नहीं किया जा रहा है—केवल निकटता, घनिष्ठता और संसर्ग के अर्थों में। सत्संग हो, कुसंग हो, संसर्ग हो—इसमें सब प्रभावित और परिवर्तित होते हैं—अगर वे सजग न हों। लेकिन जैसा हम सामान्यतः जीवन जीते हैं उसमें सजगता कम है और यांत्रिकता अधिक। इसलिए जीवन में संतुलन के लिए जरूरी है कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के परिपूरक हों। उनके अपने-अपने व्यक्तित्व अपनी परिपूर्ण खिलावट को उपलब्ध हों। तब उनके जीवन में एक सहज रसमयता होगी, एक रास होगा, अन्यथा विसंगीत और विरसता होगी।

अपने स्वभाव में जीना धर्म है, स्वधर्म है। ध्यान उसका आधार है। नारी के लिए ध्यान भी प्रेम और करुणा की भावभंगिमा अपना लेता है, नृत्य की, गीत की अभिव्यक्ति ले लेता है। मीरा उसकी प्रतीक है। पुरुष के लिए ध्यान एक मौन स्थिरता, अकंप चैतन्य के रूप में प्रदीप्त होता है। तथागत बुद्ध इसके प्रतीक हैं। इन दोनों में निजता की अनूठी खिलावट है। ओशो ने दोनों की निजता को महत्व दिया है और कहा है कि नारी पुरुष की प्रतिलिपी न बने। वह प्राकृतिक रहे, इसी में उसका सौंदर्य है।

नारी की प्रकृति क्या है?

नारी स्वयं प्रकृति है; निसर्ग है। प्रकृति जैसी है बस वैसी है, उसकी निजता में कहीं कोई विवाद नहीं है। जीवन का, जगत का सारा विवाद प्रकृति के दमन से जुड़ा है। प्रकृति की अपनी एक ऊर्जा है, उद्दाम वेग है। उसका दमन नहीं करना है, उसका संस्कार नहीं करना है—उसका परिष्कार करना है, उसे सृजनात्मक अभिव्यक्ति देनी है।

नारी एक सृजन है, सृजन की शक्ति है, अभिव्यक्ति है। नारी, चाहे वह कितनी ही उम्र की हो, मूलतः मां है। मां होना सृजनात्मक होना है। यह सृजन केवल बॉयलॉजिकल, जैविक ही नहीं—यह सृजन बहु-आयामी है, यह नारी के अंतस से जुड़ा है, अंतस से अभिव्यक्त होता है । इसलिए जब एक नारी को पूरी स्वतंत्रता उपलब्ध होती है तो वह अपने घर की चारदिवारी में कैद न रहकर आकाश में उड़ने लगती है, वह सुनीता विलियम्स हो जाती है और उसे अंतरिक्ष की ऊंचाई से जो दिखाई पड़ता है, वह विहंगम् दृष्टि उन्हें उपलब्ध नहीं होती जो अपने सीमित दायरे में घुटती रहती हैं। सुनीता विलियम्स कहती है : *''यह कल्पना करना कठिन है कि नीचे लोग विवाद में लगे हैं, झगड़ों में पड़े हैं। यहां से यह पृथ्वी इतनी शांत और सौम्य प्रतीत होती है। आकाश से देखने पर पृथ्वी पर कोई सीमाएं नहीं दिखाई पड़ती। हमारा सौभाग्य है कि हमें पृथ्वी जैसा ग्रह उपलब्ध हुआ है और हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह सदा उपलब्ध रहेगा। अंतरिक्ष में अपनी उड़ान के बाद, मैं लोगों के प्रति, उनकी धारणाओं के प्रति, हर एक चीज़ के प्रति अधिक सहिष्णु हो गयी हूं।''*

इंडिया टुडे के साथ साक्षात्कार में कहे गये सुनीता विलियम्स के ये शब्द नारी की स्वतंत्रता व सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति हैं। ऐसा ही एक अंतरिक्ष, एक आकाश नारी के भीतर है, जिसमें मीरा, दया, सहजो, राबिया, लल्ला, भूरिबाई जैसी रहस्यदर्शी स्त्रियों ने प्रवेश किया—और उनके अमृत गीतों ने पृथ्वी को दिव्यता से भर दिया। 'ओशो वर्ल्ड' का यह अंक ऐसी सभी स्त्रियों को समर्पित है।

–स्वामी चैतन्य कीर्ति